



सीएसआईआर
CSIR
भारत का नवाचार इंजन
The Innovation Engine of India



NIS&PR
National Institute of Science Communication and Policy Research
सीएसआईआर-निसपर

प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 11 अंक 4

www.csir.res.in

अप्रैल 2023

प्रयोगशाला, उद्योग और बाजार के बीच किसान बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं

डॉ. एन. कलैसेल्ली, महानिदेशक, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर)



foKku lEeyu ,o -f'k&ck | kfxdh
çn 'kuh (साइंस कॉन्क्लेव एंड एग्रो-टेक एक्सपोज़) 2023 का आयोजन 15-16 मार्च 2023 के दौरान गुरुग्राम विश्वविद्यालय, हरियाणा में किया गया।

यह एक अनूठा कार्यक्रम था जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों के लोग शामिल हुए थे।

इस विज्ञान सम्मेलन में वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, छात्रों, किसानों, उद्यमियों और प्रौद्योगिकी विकासकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

गुरुग्राम विश्वविद्यालय ने सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निसपर), नई दिल्ली और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, हरियाणा के सहयोग से इस अत्यंत उपयोगी कार्यक्रम का आयोजन किया।

उन्नत भारत अभियान (यूबीए) और



विज्ञान भारती (विभा) इस कार्यक्रम के ज्ञान भागीदारों के रूप में आगे आए।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका सृजन और सतत विकास के लिए किसानों और छात्रों को सीएसआईआर प्रौद्योगिकियों से परिचित कराना था।

कार्यक्रम की शुरुआत में विशिष्ट अतिथियों द्वारा आधिकारिक रूप से प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया।

डॉ. एन. कलैसेल्वी, सचिव, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर), भारत सरकार और वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की महानिदेशक ने मुख्य अतिथि के रूप में उद्घाटन सत्र की शोभा बढ़ाई। सम्मानित अतिथियों में हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद, पंचकुला, हरियाणा के उपाध्यक्ष डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा, प्रो. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर

—निस्पर, नई दिल्ली और प्रोफेसर दिनेश कुमार, कार्यक्रम अध्यक्ष, गुरुग्राम विश्वविद्यालय के कुलपति शामिल थे।

उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए डॉ. कलैसेल्वी ने कहा कि किसान प्रयोगशाला, उद्योग और बाजार के बीच बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उन्होंने जन सामान्य के लिए अनुसंधान और प्रौद्योगिकी की उपयोगिता / प्रयोज्यता पर जोर दिया।

उन्होंने कार्यक्रम के दौरान किसानों को

शामिल करने के लिए आयोजकों की सराहना की। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाएं एक सप्ताह एक प्रयोगशाला अभियान चला रही हैं। उन्होंने कार्यक्रम के दौरान उपस्थित छात्रों को अपने निकटवर्ती क्षेत्र की सीएसआईआर प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों से बात करने, उनसे हाथ मिलाने और विज्ञान में कई चीजें सीखने के लिए प्रेरित भी किया।

गुरुग्राम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य किसानों और छात्रों जैसे इच्छुक हितधारकों के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ संबंध बनाने के लिए बातचीत हेतु सक्षम वातावरण प्रदान करना है। सीएसआईआर—राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर—निस्पर) की निदेशक प्रोफेसर रंजना अग्रवाल ने सीएसआईआर—निस्पर के उद्देश्यों पर चर्चा की और इस साइंस कॉन्क्लेव और एग्रो—टेक एक्सपो के पीछे की अवधारणा और विचार को विस्तार से बताया।

विज्ञान भारती के संरक्षक डॉ. शंकर राव और हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद, पंचकुला, हरियाणा के उपाध्यक्ष डॉ. कैलाश चंद्र शर्मा ने भी श्रोताओं को संबोधित किया। इस कृषि-प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी (एग्रो—टेक एक्सपो) में सीएसआईआर की 8 प्रयोगशालाओं ने अपनी प्रौद्योगिकियों और उत्पादों का





प्रदर्शन किया। यह एक्सपो किसानों के साथ-साथ छात्रों के लिए भी मुख्य आकर्षण था। प्रदर्शनी (एक्सपो) के स्टालों में कई तरह की पहल की गई, जहां किसानों ने विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं में विकसित अत्याधुनिक फसल प्रजातियों, आधुनिक कृषि तकनीकों और अत्याधुनिक उपकरणों के बारे में सीखा।

वैज्ञानिक और किसान संवाद पर केंद्रित तकनीकी सत्र, ग्रामीण विकास और आत्मनिर्भर भारत के साथ-साथ साइंस मेंटलिज्म शो, साइंस कार्टून शो एवं सौर मंडल की सैर पर विशेष व्याख्यान दर्शकों के आकर्षण का केंद्र थे।

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाओं *1 kb l* *fj ikVj* *¼vix t h* *vkj foKku çxfr* *¼fgnh* ने नवाचारों और पोषक अनाज वर्ष पर विशेष अंक निकाले हैं।

साइंस कॉन्क्लेव के

दौरान, महानिदेशक, सीएसआईआर डॉ. एन. कलैसेली, गुरुग्राम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दिनेश कुमार, सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल, सीएसआईआर के संयुक्त सचिव डॉ. महेंद्र गुप्ता और अन्य अतिथियों ने दोनों विज्ञान पत्रिकाओं के मार्च, 2023 के अंकों का विमोचन किया।

इस अवसर पर इन पत्रिकाओं के संपादक श्री हसन जावेद खान और डॉ. मनीष मोहन गोरे भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के दौरान, छात्रों के लिए 'सतत विकास' पर 'ऑन द स्पोर्ट पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता' और 'आत्मनिर्भर भारत' पर विज्ञान मॉडल प्रदर्शनी का भी

आयोजन किया गया।

विज्ञान सम्मेलन (साइंस कॉन्क्लेव) के दोनों दिन कठपुतली कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कठपुतली विशेषज्ञ श्री नारायण श्रीवास्तव ने दैनिक जीवन की विभिन्न कहानियों पर आधारित कई कठपुतली कार्यक्रम प्रदर्शित किए।

कठपुतली प्रदर्शन का दर्शकों ने खूब आनन्द लिया।

16 मार्च, 2023 को स्टार्टअप ओडिशा के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. ओंकार राय और आयुष मंत्रालय, भारत सरकार की केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (सीसीआरयूएम) के महानिदेशक प्रो. असीम अली खान ने सम्मेलन के समापन सत्र की शोभा बढ़ाई।

इस कार्यक्रम में आसपास के जिलों के एक हजार से अधिक वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, किसानों और स्कूल और कॉलेज के छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।



डॉ. प्रबोध त्रिवेदी ने सीएसआईआर-आईएचबीटी के निदेशक का अतिरिक्त प्रभार संभाला

डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी को वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), नई दिल्ली द्वारा एक अंतरिम व्यवस्था के रूप में सीएसआईआर-हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (आईएचबीटी), पालमपुर, हिमाचल प्रदेश के निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया है।

वर्तमान में, डॉ. त्रिवेदी, सीएसआईआर-सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसिनल एंड एरोमैटिक प्लांट्स (सीमैप), लखनऊ, उत्तर प्रदेश में निदेशक के रूप में कार्यरत हैं।

डॉ. संजय कुमार, सीएसआईआर-आईएचबीटी से निदेशक के रूप में 28 फरवरी, 2023 को सेवानिवृत्त हुए हैं। उनका कुल कार्यकाल 33 से अधिक वर्षों तक रहा, जिसमें से लगभग आठ वर्षों तक डॉ. कुमार, निदेशक, सीएसआईआर-आईएचबीटी के पद पर रहे।

डॉ. संजय कुमार ने अनुकरणीय नेतृत्व का प्रदर्शन किया और इस संस्थान को उपलब्धि की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। उनका समर्पण, कड़ी मेहनत और उत्कृष्टता, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय शिक्षा और उद्योगों के साथ संबंधों को बढ़ावा देने में सहायक रही है।

प्लांट बायोटेक्नोलॉजी और बायोकेमिस्ट्री में वैज्ञानिक योगदान के अलावा, डॉ. कुमार ने देश में पहली बार हींग और मोंक फल और गैर-पारंपरिक क्षेत्रों में केसर, दालचीनी, मुलेठी, स्टीविया, सेब और ट्यूलिप



वैकल्पिक फसलें पेश करके कृषक समुदायों के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उनके प्रयासों से हिमाचल प्रदेश में स्वर्ण क्रांति की शुरुआत हुई, तथा प्रदेश सुगंधित

के माननीय प्रधानमंत्री भी शामिल हैं।

सीएसआईआर-आईएचबीटी के निदेशक के रूप में कार्यभार संभालने के दौरान, डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी ने

डॉ. संजय कुमार द्वारा किए गए अभूतपूर्व योगदान की सराहना की और संस्थान में चल रही गतिविधियों को उन्हें बिना रुकावट आगे बढ़ाने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर संस्थान के विभिन्न विभागों के प्रमुखों



डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी

डॉ. संजय कुमार

गेंदा से आवश्यक तेल के उत्पादन में शीर्ष राज्य बनकर उभरा।

इनमें से कुछ प्रयासों को तो प्रदेश एवं भारत सरकार के सर्वोच्च कार्यालय में उल्लेखनीय सराहना मिली, जिसमें भारत

और अन्य वरिष्ठ स्टाफ सदस्यों ने डॉ. कुमार द्वारा संस्थान को प्रदान की गई विभिन्न वैज्ञानिक और प्रशासन संबंधी सेवाओं में उनके समर्पण और योगदान की प्रशंसा की।

विज्ञान प्रगति और साइंस रिपोर्टर के 'स्वास्थ्य विशेषांक' का विमोचन आईसीएमआर मुख्यालय में

अधिकांश लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति चिंतित रहते हैं और हाल ही में कोविड महामारी ने आम लोगों को स्वास्थ्य और वैज्ञानिक अनुसंधान के बारे में जानने के लिए जागरूक किया है। ऐसे में आम जन को विभिन्न स्वास्थ्य पहलुओं से अवगत कराने के लिए विज्ञान संचार की अहम भूमिका है। और सीएसआईआर-निस्पर द्वारा दशकों से प्रकाशित विज्ञान प्रगति और साइंस रिपोर्टर जैसी लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाएँ इस दिशा में बहुत प्रभावी भूमिका निभाती हैं।

अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति करते हुए विज्ञान प्रगति और साइंस रिपोर्टर के अप्रैल 2023 के विशेष अंक स्वास्थ्य पर केन्द्रित था। इस अंक में आईसीएमआर के वैज्ञानिकों द्वारा लिखे गए लेखों का समावेश है।

इस उपलक्ष्य में, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के दिल्ली स्थित मुख्यालय में 10 अप्रैल 2023 को विज्ञान प्रगति और साइंस रिपोर्टर के अप्रैल अंक के विमोचन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर, डॉ. राजीव बहल, सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डीएचआर) और महानिदेशक, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) ने सीएसआईआर-निस्पर के इस प्रयास की सराहना की और आईसीएमआर के वैज्ञानिकों को भविष्य में भी इन पत्रिकाओं से जुड़े रहने का प्रस्ताव रखा।

सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रो. रंजना अग्रवाल ने इस अवसर पर कहा कि सीएसआईआर की ये दो पत्रिकाएँ सात दशकों की विरासत को

लेकर चल रही हैं और प्रामाणिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के ज्ञान के प्रसार के माध्यम से समाज में वैज्ञानिक सोच पैदा कर रही हैं।

इस विशेष अंक में कई स्वास्थ्य संबंधी लेख शामिल किए गए हैं जैसे मानसिक स्वास्थ्य, महामारी विज्ञान, जीवन शैली संबंधी रोग, मातृ और ओरल हेल्थ, बाल विवाह के स्वास्थ्य परिणाम आदि। इन विषयों पर आईसीएमआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं में कार्यरत विषय विशेषज्ञ वैज्ञानिकों ने अपने विचार साझा किए हैं। यह विशेष अंक 16 नवंबर 2022 को सीएसआईआर-निस्पर में विज्ञान संचार पर आयोजित एक कार्यशाला का प्रतिफल है। इस कार्यशाला में आईसीएमआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं में कार्यरत विषय विशेषज्ञ वैज्ञानिकों ने शिरकत की और उन्हीं वैज्ञानिकों के लेखों का इस अंक में समावेश है।

इस विशेष विमोचन समारोह में, साइंस रिपोर्टर के संपादक श्री हसन जावेद खान और विज्ञान प्रगति के संपादक डॉ. मनीष मोहन गोरे ने भी कार्यक्रम के दौरान अपने विचार साझा किए। डॉ. राजीव, वरिष्ठ वित्तीय सलाहकार, डीएचआर; डॉ. रजनीकांत, निदेशक, आरएमआरसी, गोरखपुर आईसीएमआर के विभागों के प्रमुख; डॉ. ईना डोगरा, वैज्ञानिक, आईसीएमआर; सुश्री सोनाली नागर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर और सुश्री शुभदा कपिल, सहायक संपादक, विज्ञान प्रगति;



श्री पल्लव बागला, विज्ञान पत्रकार भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

“मूल एवं पूरक नियम (FR/SR) पर एक सरल अध्ययन” नामक पुस्तक का विमोचन

आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर परिषद् मुख्यालय में कार्यरत श्री विवेक बाजपेयी, अनुभाग अधिकारी द्वारा हिन्दी भाषा में “मूल एवं पूरक नियम (FR/SR)—एक सरल अध्ययन” विषय पर पुस्तक का संकलन किया गया एवं दिनांक 28.02.2023 को श्री महेन्द्र कुमार गुप्ता, संयुक्त सचिव (प्रशा.), सीएसआईआर द्वारा परिषद् मुख्यालय के शांति स्वरूप भटनागर सभागार में उक्त पुस्तक का विमोचन सम्पन्न हुआ।

संयुक्त सचिव ने श्री बाजपेयी को शुभकामनाएं दी एवं सभागार में उपस्थित सीएसआईआर मुख्यालय के सभी कर्मचारियों/अधिकारियों से इनकी पुस्तक का अध्ययन करने और ज्ञानवर्धन कर कार्यालय के काम-काज में प्रयोग की सलाह भी दी।

इस अवसर पर परिषद् मुख्यालय के अनेक वरिष्ठ अधिकारियों ने श्री बाजपेयी को शुभकामनाएं देकर उनका उत्साहवर्धन किया और कहा कि हम सभी के लिए यह गौरव का क्षण है।

सीएसआईआर के किसी अधिकारी द्वारा लिखित पुस्तक का सीएसआईआर मुख्यालय में विमोचन अपनी तरह का पहला आयोजन था।

विमोचन के अवसर पर परिषद् मुख्यालय के श्री सुरेन्द्र कुमार, वरिष्ठ उप-सचिव श्री राज हंस गौतम, वरि. उप-वित्तीय सलाहकार; श्री राकेश बिडालिया, वरि. उप-वित्तीय सलाहकार; श्री बलजीत सिंह, वरि. उप-वित्तीय सलाहकार; श्री श्रीदेब नंदा, भंडार एवं क्रय नियंत्रक एवं श्री के पी शर्मा,

पूर्व प्रशासन नियंत्रक, सीएसआईआर—आईआईटीआर, श्री संजय कुमार बिनोदिया, वित्त एवं लेखाधिकारी; श्री रंजीत प्रसाद यादव, अवर सचिव; श्री राम कुमार सिंह, अवर सचिव; श्री प्रमोद कुमार, अनुभाग अधिकारी; श्री अनिरुद्ध मनवाल, अनुभाग अधिकारी; श्री अजय कुमार राठी, अवर सचिव भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री हरीश कुमार, अवर सचिव, परिषद् मुख्यालय ने कहा कि “मेरा ऐसा मानना है कि एकाग्रता, सच्ची लगन, कड़ी मेहनत, एवं ईमानदार सोच तथा धैर्य आदि गुणों से सम्पन्न व्यक्ति ही लेखन कार्य कर सकता है। श्री बाजपेयी जी में ये सभी गुण परिलक्षित होते हैं।

यह पुस्तक हिन्दी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके आए कर्मिकों को अंग्रेजी में कार्य करने में आने वाली कठिनाई को समाप्त करने और साथ ही अंग्रेजी में कार्य करने की ‘पीछे देखो, आगे चलो’ की पुरानी चली आ रही परम्परा को समाप्त कर मौलिक रूप से अपने कार्यों के सम्पादन में निश्चित तौर पर कर्मिकों के लिए उपादेय सिद्ध होगी एवं सरकारी नियमों को सरल-सहज हिन्दी भाषा में उपलब्ध कराने से संघ सरकार की राजभाषा हिन्दी सम्बंधी नीति



के प्रचार-प्रसार को भी बल मिलेगा। तथा जो विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न विभागीय परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं उनके लिए भी कारगर सिद्ध होगी।

मैं श्री बाजपेयी जी के पुस्तक के सफल होने की कामना करता हूँ एवं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ।”

अपने सम्बोधन में श्री बाजपेयी ने कहा, “पुस्तक में केवल मौलिक/पूरक नियमों का संक्षिप्त ज्ञान ही नहीं है बल्कि उचित क्रम और व्यवस्थित तरीके से इसका खाका भी उपलब्ध है ताकि कोई भी इसे बिना किसी प्रयास के समझ सके और सभी का सारांश केवल 103 पृष्ठों में प्राप्त कर सके।

मुझे उम्मीद है कि यह पुस्तक केंद्र सरकार के अधिकारियों को एक सहज और कॉम्पैक्ट नियम पुस्तिका प्रदान करने के लिए इसके संकलन के दौरान की गई मेरी अपेक्षाओं को पूरा करेगी।

असमिया में विज्ञान संचार को बढ़ावा देने के लिए सीएसआईआर-निस्पर द्वारा कार्यशाला आयोजित



भाषा की बाधा को तोड़ने और प्रक्रिया को समावेशी बनाने के लिए भारतीय भाषाओं में विज्ञान संचार को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।

असमिया में विज्ञान संचार गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) ने 6 मार्च, 2023 को 'असमिया में विज्ञान संचार के आकर्षक और रचनात्मक तरीके: लोकप्रिय कहानियाँ, वीडियो, पॉडकास्ट और सोशल मीडिया' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया।

कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य नवोदित विज्ञान संचारकों को प्रशिक्षित करना और असमिया में विज्ञान संचार गतिविधियों को मजबूत करने के लिए संचारकों का एक नेटवर्क बनाना था।

कार्यशाला को उत्तर पूर्व भारत में विज्ञान संचार के लिए एक ओएलपी

परियोजना के तहत समर्थित किया गया था और इसे हाइब्रिड मोड में आयोजित किया गया था।

कार्यशाला की शुरुआत सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिक डॉ. परमानंद बर्मन के स्वागत सम्बोधन से हुई, जिसमें उनके द्वारा लोकप्रिय विज्ञान लेखन के अलावा भारतीय भाषाओं में विज्ञान के संचार और सोशल मीडिया जैसे आधुनिक प्लेटफार्मों के उपयोग के महत्व को रेखांकित किया गया।

सीएसआईआर-निस्पर की निदेशक प्रोफेसर रंजना अग्रवाल ने सत्र में शामिल होने वाले विशेषज्ञों और प्रतिभागियों का स्वागत किया।

अपने संबोधन में, प्रोफेसर अग्रवाल ने क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञान के संचार के महत्व और असमिया जैसी विशिष्ट भाषा पर केंद्रित कार्यशालाओं के लाभों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने असमिया सहित 16 क्षेत्रीय भाषाओं में भारत के

पारंपरिक ज्ञान को संप्रेषित करने के लिए एक मंच प्रदान करने में सीएसआईआर-निस्पर और मिशन स्वस्तिक (वैज्ञानिक रूप से मान्य सामाजिक पारंपरिक ज्ञान) की भूमिका का भी वर्णन किया।

प्रो. अग्रवाल ने असमिया में विज्ञान संचार को बढ़ावा देने के लिए सीएसआईआर-निस्पर के साथ सीएसआईआर-एनआईएसटी के सहयोग का भी उल्लेख किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. बर्नली सरमा ने "असमिया भाषा में विज्ञान संचार की लोकप्रियता: विकास-प्रयास-प्रभाव" पर एक व्याख्यान दिया, जिसमें विज्ञान संचार की मूल बातें, विज्ञान संचार की आवश्यकता और असमिया में विज्ञान संचार के लिए वर्तमान प्रयासों को शामिल किया गया।

नेचर इंडिया की मुख्य संपादक सुभ्रा प्रियदर्शिनी ने विज्ञान के संचार के लिए

सोशल मीडिया और एआई जैसे नए उपकरणों और प्लेटफार्मों के विकास पर चर्चा की। हालाँकि, उन्होंने आधार के रूप में विज्ञान लेखन के महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे विज्ञान को संप्रेषित करने के लिए क्षेत्रीय भाषा का उपयोग पाठ्य सामग्री को दर्शकों के लिए अधिक प्रासंगिक बना सकता है और इन स्थानीय कहानियों को वैश्विक दर्शकों तक ले जाने के लिए अनुवाद जैसे प्रयासों का उपयोग कैसे किया जा सकता है।

कार्यशाला का तकनीकी सत्र I “विज्ञान फिल्म निर्माण” पर था जिसमें विज्ञान का संचार करने के लिए फिल्म जैसे दृश्य माध्यम के महत्व पर श्री विवेक कन्नडी, साइंस मीडिया सेंटर, आईआईएसआईआर पुणे द्वारा दी गयी एक वार्ता शामिल थी। उन्होंने फिल्म निर्माण के महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे कि पटकथा और इसे कैसे संरचित किया जाना चाहिए, को भी कवर किया।

अभिजीत शर्मा बरुआ ने पाठकों को आकर्षित करने के लिए विज्ञान संचार की विभिन्न रणनीतियों को रेखांकित किया।

उन्होंने एक लोकप्रिय विज्ञान लेख लिखने के लिए प्रमुख बिंदुओं पर प्रकाश डाला और उदाहरणों को जोड़ा कि कैसे विज्ञान कॉमिक्स, स्किटोन्स और विज्ञान कथा लेखन विज्ञान पाठकों को आकर्षित करने के साथ-साथ आम दर्शकों के लिए वैज्ञानिक निष्कर्षों का प्रसार करने में प्रभावी हो सकते हैं।

“लोकप्रिय विज्ञान लेखन” पर तकनीकी सत्र II में प्रमुख असमिया विज्ञान संचारकों श्री अभिजीत सरमा बरुआ, डॉ. दिनेश चंद्र गोस्वामी और डॉ. मंटू भुइयां द्वारा वार्ता शामिल थी।

डॉ. दिनेश चंद्र गोस्वामी ने हाल की वैज्ञानिक प्रगति जैसे कि आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलों सहित अन्य के प्रकाश में विज्ञान संचार की आवश्यकता पर चर्चा



की।

उन्होंने आम लोगों में वैज्ञानिक मानसिकता को बढ़ावा देने और वैज्ञानिक प्रगति में जनता का विश्वास जीतने में विज्ञान संचार के महत्व पर भी ध्यान दिया।

डॉ. गोस्वामी ने विज्ञान संचारकों को चुनौतियों से उबरने में मदद करने के लिए कौशल विकास के महत्व का भी उल्लेख किया।

डॉ. मंटू भुइयां ने विज्ञान लेखन में वर्तमान विकास के लिए सटीकता और प्रासंगिकता के महत्व पर जोर दिया और रेचेल कार्सन की पुस्तक साइलेंट स्प्रिंग का उदाहरण दिया, जिसने डीडीटी और पर्यावरण पर इसके प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाई।

“सोशल मीडिया, रील्स, शॉर्ट्स और पॉडकास्ट फॉर साइंसकॉम” के तकनीकी सत्र III में डॉ. एच एस सुधीरा, निदेशक, गुब्बी लैब्स, “सोशल मीडिया फॉर साइंस कम्युनिकेशन” और डॉ. चारु लता, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर और डॉ. परमानंद बर्मन “रील्स, शॉर्ट्स और पॉडकास्ट: स्वस्तिक एक केस स्टडी के रूप में” चर्चा की।

डॉ. एच एस सुधीरा ने वैज्ञानिकों के लिए सोशल मीडिया के लाभों और महत्व के बारे में बात की और बताया कि कैसे एक अच्छा ऑनलाइन पदचिह्न व्यापक दर्शकों तक पहुंचने में सहायक हो सकता है।

डॉ. चारु लता ने स्वस्तिक (वैज्ञानिक रूप से मान्य पारंपरिक ज्ञान के प्रसार पर एक परियोजना), इसके उद्देश्य और डिजिटल स्पेस में इसके कदम की झलक प्रदान की।

डॉ. परमानंद बर्मन और टीम के सदस्यों ने ऑनलाइन उपलब्ध मुफ्त टूल का उपयोग करके इन्फोग्राफिक्स, वीडियो और पॉडकास्ट जैसी डिजिटल सामग्री के निर्माण का प्रदर्शन किया।

तकनीकी सत्रों के बाद श्री हसन जावेद खान, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर और संपादक, साइंस रिपोर्टर द्वारा प्रतिभागियों के साथ विज्ञान संचार के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई और विज्ञान संचार में रचनात्मक लेखन की चुनौतियों पर प्रतिभागियों के कुछ दिलचस्प प्रश्नों का उत्तर दिया। समापन सत्र में डॉ. सुजीत भट्टाचार्य, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर डॉ. कल्याणी मेधी, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-एनईआईएसटी, और श्री माधुर्यय सैकिया, सीएसआईआर-एनईआईएसटी ने कार्यशाला के दौरान चर्चा किए गए विभिन्न विषयों पर टिप्पणियां शामिल कीं।

डॉ. मनीष मोहन गोरे, वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव दिया गया।

सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान ने अपना 64वां स्थापना दिवस और डॉ. बी. आर. अंबेडकर जयंती मनाई

कार्यक्रम को सीएसआईआर-आईआईपी के “वन वीक वन लैब” अभियान के एक भाग के रूप में आयोजित किया गया जहां ओएनजीसी समूह के अध्यक्ष श्री अरुण के. सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में शोभा बढ़ाई और राजपुर विधायक श्री खजान दास कार्यक्रम के सम्मानित अतिथि थे

कार्यक्रम का शुभारंभ भारत रत्न डॉ. बी. आर. अंबेडकर को श्रद्धांजलि देने के साथ किया गया। इसके बाद अनुसूचित जाति/जनजाति कर्मचारी कल्याण समिति के अध्यक्ष श्री जगदीश कुमार ने डॉ. बी. आर. अंबेडकर के जीवन और उनकी उपलब्धियों पर अनूठा भाषण दिया। सीएसआईआर-आईआईपी के निदेशक डॉ. अंजन रे ने अतिथियों का स्वागत किया और “वन वीक वन लैब” अभियान के अन्तर्गत आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों के बारे में बताया। उन्होंने भारत के पहले डी-मेथनॉल प्लांट, एफटीएल और अप-स्ट्रीम लैब जैसी नई सुविधाओं के महत्व के बारे में भी बताया, जिनका उद्घाटन इसी शुभ दिन पर किया जाएगा।

वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुमन लता जैन ने इस संस्थान की उपलब्धियों और भविष्य के फोकस क्षेत्रों के बारे में बताया जैसे कि कच्चे तेल से लेकर पेट्रोकेमिकल्स, सीसीयूएस और ऊर्जा दक्षता, और आयातित जीवाश्म कच्चे माल के बजाय स्थानीय रूप से उपलब्ध घरेलू कार्बन संसाधनों का उपयोग करना।

उन्होंने यहां उपस्थित गणमान्य लोगों को ये भी बताया कि सीएसआईआर-आईआईपी पहली ऐसी सीएसआईआर प्रयोगशाला है जिसने उचित अपशिष्ट प्रबंधन

के लिए ‘4 आर’ (रीयूज, रीसाइकल, रिड्यूस और रिकवर) रणनीतियों को अपनाकर इको-कैंपस स्थापित किया है।

श्री खजान दास ने महिलाओं के उत्थान और दलितों की सामाजिक स्वतंत्रता के लिए डॉ. बी. आर. अंबेडकर द्वारा किए गए संघर्ष और प्रयासों को याद किया। उन्होंने बाबासाहेब को मरणोपरांत भारत रत्न देने की घोषणा करने के लिए भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी की भी प्रशंसा की। उन्होंने न सिर्फ वैज्ञानिक उपलब्धियों के लिए बल्कि समाज और आम लोगों के लिए इस संस्थान के योगदान के लिए इसकी प्रशंसा की।

उन्होंने इस संस्थान को भविष्य के विकास और उपलब्धियों के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं।

बाद में वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुनील पाठक ने सीएसआईआर-नीरी नागपुर के सहयोग से सीएसआईआर-आईआईपी द्वारा विकसित जीआईएस मैपिंग ऐप का प्रदर्शन किया।

ओएनजीसी समूह के अध्यक्ष श्री अरुण कुमार सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि



हाल के दौर में विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने हमारे समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने गूगल सर्च का उदाहरण दिया जो किसी के भी दर्जे के इतर उसे तत्काल जानकारी प्रदान कर सकता है। उन्होंने ये भी जिक्र किया कि अगले 30 सालों में डेमोग्राफिक, डिजिटलाइजेशन, डीकार्बनाइजेशन और डीग्लोबलाइजेशन (आंशिक) जैसे ‘4 डी’ का पालन करके देश का विकास होगा। उन्होंने कहा कि देश की आत्मनिर्भरता के लिए भारत के पास कच्चे तेल को रसायन और अपरंपरागत और नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों में परिवर्तित करने के जबरदस्त अवसर हैं। उन्होंने कहा कि आईआईपी ‘क्रूड टू पेटकेम’ (पेट्रोकेमिकल) पर काम कर सकता है और ऊर्जा की तीव्रता को कम करने के लिए

ऊर्जा-कुशल प्रक्रियाओं को विकसित कर सकता है जो कार्बन फुटप्रिंट्स को कम करने में भी मदद करेगा।

अंत में सीएसआईआर-आईआईपी के प्रशासनिक अधिकारी श्री सी. ए. बोध ने सबको धन्यवाद दिया।

इस कार्यक्रम का संचालन संस्थान के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी श्री सोमेश्वर पांडेय ने किया।

सीएसआईआर-आईएमएमटी ने अपना हीरक जयंती स्थापना दिवस मनाया

सीएसआईआर-आईएमएमटी (खनिज और सामग्री प्रौद्योगिकी संस्थान), भुवनेश्वर ने अपना हीरक जयंती स्थापना दिवस माननीय मुख्य अतिथि प्रोफेसर करुणाकर नंदा, निदेशक, भौतिकी संस्थान, भुवनेश्वर; विशिष्ट अतिथि डॉ. त्रिलोचन महापात्र, पूर्व महानिदेशक, आईसीएआर और सचिव डेयर; डॉ. जी नरहरि शास्त्री, निदेशक, सीएसआईआर-आईएमएमटी भुवनेश्वर, डॉ. अशोक कुमार साहू, समन्वयक, स्थापना दिवस समारोह समिति और कई अन्य वैज्ञानिक, अधिकारी और कर्मचारियों के साथ मनाया।

सीएसआईआर-आईएमएमटी भुवनेश्वर की स्थापना 13 अप्रैल 1964 को हुई थी। यह क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला (आरआरएल) से आईएमएमटी तक की यात्रा है। अपनी स्थापना के बाद से, सीएसआईआर-आईएमएमटी ने परिष्कृत उपकरण सुविधाओं और तकनीकी परीक्षण सेवाओं के साथ खनिज और सामग्री संसाधन इंजीनियरिंग के क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों के प्रभावी उपयोग और संरक्षण के लिए उद्योगों, सरकारी एजेंसियों और लाइन मंत्रालयों को अथक सेवा प्रदान की।

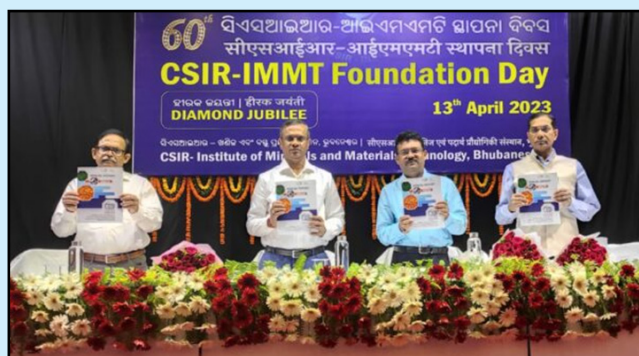
सीएसआईआर-आईएमएमटी ने एसीएसआईआर जिज्ञासा, कौशल विकास, सीआरडीटीएज और इनक्यूबेशन सेंटर-इन टेक के माध्यम से वैज्ञानिक सामाजिक उत्तरदायित्वों

के प्रति अपनी सेवा का विस्तार किया।

अतिथियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करते हुए डॉ. जी नरहरि शास्त्री, निदेशक, सीएसआईआर-आईएमएमटी, भुवनेश्वर ने संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. जी नरहरि शास्त्री निदेशक, सीएसआईआर-आईएमएमटी ने इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों को धन्यवाद दिया।

इसके साथ ही उन्होंने आरआरएल प्रयोगशाला से सीएसआईआर-आईएमएमटी की 60 साल की शानदार यात्रा की जानकारी दी। 2022 की वार्षिक रिपोर्ट पेश करते हुए उन्होंने कहा, सीएसआईआर-आईएमएमटी ने खनिजों और सामग्रियों के क्षेत्र में काफी शोध किया है। जो देश की कई प्रमुख कंपनियों को उनके उत्पादन क्षेत्र में मदद कर रहा है। हम सभी क्षेत्रों में खनिजों के स्थायी और बेहतर समाधान के लिए प्रयास करने के लिए विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन करते हैं।

हम अपनी क्षमता और क्षमता को और बढ़ाएंगे ताकि भारत इस क्षेत्र की सभी समस्याओं को हल करने के लिए सीएसआईआर-आईएमएमटी को उपयुक्त पाए। मैं उन सभी कर्मचारियों को दिल से धन्यवाद देता हूँ जिनके कारण आज हम यहां तक पहुंचे हैं।



इस अवसर पर हिन्दी पत्रिका वर्ष 2022 का विमोचन किया गया।

स्थापना दिवस व्याख्यान डॉ. त्रिलोचन महापात्र, पूर्व महानिदेशक, आईसीएआर और डेयर सचिव ने दिया। इस अवसर पर प्रोफेसर ए के साहू, समन्वयक, हीरक जयंती समारोह समिति सीएसआईआर-आईएमएमटी ने संस्थानों की शानदार उपलब्धियों पर चर्चा की और इस अवसर पर दिए गए विभिन्न पुरस्कार और सीएसआईआर आईएमएमटी और कई स्टार्टअप और संस्थानों के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन की भी घोषणा की। इस अवसर पर, सीएसआईआर-आईएमएमटी ने संस्थानों और स्टार्टअप्स के साथ समझौता ज्ञापनों/समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

स्थापना दिवस समारोह समिति के समन्वयक डॉ. अशोक कुमार साहू ने सभी अतिथियों, गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिनिधियों को स्थापना दिवस समारोह में भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया।

सीएसआईआर-निस्पर द्वारा विचार मंथन कार्यशाला आयोजित

“सीएसआईआर खाद्य और कृषि-प्रौद्योगिकियों का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव: हितधारकों के साथ एक संवाद”



संवाद उन विभिन्न बाधाओं की पहचान करने और उन्हें दूर करने में मदद करेगा जो नवीन खाद्य और कृषि-प्रौद्योगिकियों के सफल हस्तांतरण और अपनाने में बाधा डालती हैं, और परिणामस्वरूप हमारे देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान करती हैं।

परियोजना के अवलोकन पर जानकारी देते हुए, डॉ. एल. प्लाम्ते, प्रधान अन्वेषक और वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर ने परियोजना की पृष्ठभूमि और उद्देश्यों पर प्रकाश डाला, जैसे रोजगार सृजन, आय सृजन, ग्रामीण अर्थव्यवस्था में योगदान और महिला सशक्तिकरण, आयात प्रतिस्थापन, निर्यात योगदान और उपयोगकर्ताओं के लिए नया व्यवसाय खोलना।

उन्होंने अनुसंधान के लिए सीएसआईआर को सार्वजनिक धन के लाभों का आकलन करने और सामाजिक कारणों के प्रति इसकी प्रतिबद्धता पर जोर दिया। मूल्यांकन विकासशील प्रौद्योगिकियों की लागत और लाभों में अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा, और प्रौद्योगिकी विकास के इच्छित उद्देश्यों की पूर्ति की स्थिति भी प्रदान करेगा।

dk; 'kkyk d nkjku gbl ckrphr d e[; v'kk&

स्परुलिना फाउंडेशन, तुमकुर के अध्यक्ष श्री महेश आर.वी. ने कहा कि उन्होंने 2010 में स्परुलिना उत्पादन पर अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत करने के बाद, एक कंपनी की स्थापना की, और जेएसडब्ल्यू फाउंडेशन और वेलकम फाउंडेशन के साथ करार

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर, नई दिल्ली) ने “सीएसआईआर खाद्य और कृषि-प्रौद्योगिकियों के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव: हितधारकों के साथ एक संवाद” पर विचार-मंथन कार्यशाला का आयोजन किया। प्रो. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर ने जमीनी स्तर पर सीएसआईआर प्रयोगशालाओं से समाज में नवीन प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण में अंतर की पहचान करने के महत्व पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि साझा करके इस कार्यक्रम की शुरुआत की।

कृषि क्षेत्र हमारे देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अपने नवीन खाद्य और कृषि-प्रौद्योगिकियों से उत्पादकता में वृद्धि, फसल की बेहतर पैदावार और कृषि

उत्पादों की बेहतर गुणवत्ता का कारण बन सकती हैं।

अपने संबोधन में, प्रो. अग्रवाल ने प्रौद्योगिकी विकास और इसके व्यावहारिक कार्यान्वयन के बीच मौजूदा अंतराल को पाटने के लिए नवीनता, प्रौद्योगिकियों की ताकत और हितधारकों की राय जैसे कारकों पर विचार करने के महत्व पर प्रकाश डाला। यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी प्रगति का लाभ समय पर और कुशल तरीके से अंतिम उपयोगकर्ताओं तक पहुंचे।

इसे प्राप्त करने के लिए एक बहु-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण होना आवश्यक है जिसमें शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं, किसानों, फर्मों और उद्यमियों जैसे विभिन्न हितधारकों को भी शामिल किया गया है।

उन्होंने कहा कि कार्यशाला के दौरान



किया है। उन्होंने एक एनजीओ में 15,000 से 100,000 कुपोषित बच्चों की सेवा की है, और भारत के विभिन्न हिस्सों में 30 स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) स्थापित किए हैं।

उनकी पहल से प्रेरित होकर, कर्नाटक राज्य सरकार ने सभी कुपोषित बच्चों को स्फिरुलिना प्रदान करने के लिए एक राज्य बजट योजना शुरू की। उनका संगठन, मदर्स अगेंस्ट मालन्यूट्रिशन, 6 एलएस (स्थानीय समस्याएं, स्थानीय समाधान, आजीविका के लिए अग्रणी, स्थानीय महिलाओं के लिए) की अवधारणा का पालन करता है।

श्री सुरेश के.एस., श्री श्रीधरेश्वर कोकोनट प्रोडक्ट्स, मैसूर ने नारियल की कीमतों में गिरावट आने पर नारियल किसान के रूप में वैल्यू एडिशन की शुरुआत की। उनके संगठन का उद्देश्य कोल्ड-प्रोसेस्ड सेंट्रीफ्यूगल सेपरेशन मेथड का उपयोग करके सीएफटीआरआई तकनीक द्वारा वर्जिन नारियल तेल सहित गुणवत्ता वाले नारियल मूल्यवर्धित

उत्पाद प्रदान करना है। वे नारियल उत्पादों को नवीन रूप देने के लिए अनुसंधान और विकास करते हैं और अद्यतन और उन्नयन को प्राथमिकता देते हैं।

श्रीप्रांजलबरुआ, सीईओ / जनरल सेक्रेटरी, मशरूम डेवलपमेंट फाउंडेशन, गुवाहाटी ने 1995 में मशरूम उगाना शुरू किया और मशरूम की खेती, उत्पादन और विपणन पर 1,200 महिला किसानों को प्रशिक्षित किया। उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में मशरूम उगाने वाले समूहों का भी गठन किया।

सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर के डॉ. महेश गुप्ता और सीएसआईआर-एनईआईएसटी, जोरहाट के डॉ. जतिन कलिता ने हितधारकों की समस्याओं का समाधान दिया। सीएसआईआर तथा सीएफटीआरआई, मैसूर के डॉ. नवीन कुमार रस्तोगी और डॉ. एस.एस. ममता ने संक्षेप में अपनी प्रयोगशाला में उपलब्ध तकनीकों के बारे में बताया और हितधारकों की समस्याओं के समाधान का सुझाव भी दिया।

सुश्री टोको मीनू लिखा और अरुणाचल प्रदेश की 3 अन्य महिला उद्यमियों ने

वर्मी-खाद उत्पादन के साथ अपने अनुभव साझा किए और विपणन, प्रौद्योगिकी को अनुकूलित करने, उपकरण आयात करने और वित्तीय मुद्दों की चुनौतियों पर प्रकाश डाला।

नई दिल्ली में नियोकॉन्सेप्ट एंटरप्राइजेज का प्रतिनिधित्व करने वाली अनीता कटारिया ने अपनी बेटी जोशिता कटारिया के साथ डोसा बनाने की मशीन पर चर्चा की। उन्होंने अपनी मशीन के महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला और यह भी उल्लेख किया कि सीएसआईआर-सीएफटीआरआई ने उनकी चपाती मशीन ले ली है।

जोशिता ने दोनों तकनीकों की तुलना की और निष्कर्ष निकाला कि दक्षिण क्षेत्र की तुलना में उत्तर भारत क्षेत्र में डोसा की मांग कम है, चपाती मशीन उत्तर भारत में काफी लोकप्रिय है।

काशीपुर में सिंह एग्रीटेक प्राइवेट लिमिटेड के श्री लखविंदर सिंह छीना ने आभार व्यक्त किया।

आईएचबीटी-पालमपुर ने रेडी-टू-ईट

खाद्य पदार्थों के लिए कैंनिंग तकनीक को स्थानांतरित करने में उनके समर्थन पर अपनी राय साझा की जो कि रासायनिक और परिरक्षक—मुक्त हैं।

उन्होंने स्थानीय बाजार में बड़ी मात्रा में इन खाद्य पदार्थों का उत्पादन और आपूर्ति करने की सूचना दी।

उन्होंने उन रोगियों को डिब्बाबंद खिचड़ी प्रदान करने के लिए अस्पतालों से जुड़ने का भी सुझाव दिया जो उचित भोजन का उपभोग करने में असमर्थ हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने इन उत्पादों को कनाडा में निर्यात करने के अपने सफल अनुभव को साझा किया।

ईटानगर में एपीसीएस एंड टीके परियोजना निदेशक डॉ. देबजीत महंता

ने उच्च मूल्य वाले वाणिज्यिक केला फाइबर निष्कर्षण और उत्पाद विकास के साथ-साथ सिट्रोनेला और लेमनग्रास की कृषि-प्रौद्योगिकियों के लिए कच्चा माल प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों के बारे में अपने अनुभव साझा किए।

उन्होंने सीएसआईआर तथा एनईआईएसटी से लाइसेंस प्राप्त किया और अरुणाचल प्रदेश के विभिन्न जिलों को 5000 बौने पौधे प्रदान किए। इसके अतिरिक्त, उन्होंने उद्यमियों के समूहों, स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) और किसान संघ समूहों के लिए दस जागरूकता प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया।

मांड्या, कर्नाटक में भवानी इंडस्ट्रीज के सुनील एस. ने ढल मिलिंग मशीनरी के

साथ अपने अनुभव साझा किए।

2001 में, उनके पिता और चाचा ने सीएसआईआर-सीएफटीआरआई से लाइसेंस प्राप्त किया और कर्नाटक सरकार की सब्सिडी के तहत मशीनरी बेची। उन्होंने मशीनों के डिजाइन में ग्राहकों की प्रतिक्रिया भी शामिल की।

मशीनें बहुमुखी हैं और इन्हें कई प्रकार की ढल मिलिंग अनुप्रयोगों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। कुल मिलाकर, कार्यशाला एक सफल आयोजन था (देश भर में विभिन्न हितधारकों को हाइब्रिड मोड में जोड़ा गया)।

डॉ. सुमन रे, प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर द्वार धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।

सीएसआईआर-मानव संसाधन विकास केंद्र, गाजियाबाद द्वारा आयोजित कार्यक्रम



प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।
2- 13 Qjoh] 2023 dk ljdkjh
b&ekdVlyl title %lh,lvkbvkvj
&lh,yvkvkvb] ,lbvkv]lh
lh,QVhvkjvkvb] lhblhvkjvkvb]
,u,,y vkj ,uvkbvkvb],lvh d
fy,% ij dk;'kkyk

सीएसआईआर-एचआरडीसी ने 13 फरवरी, 2023 को सीएसआईआर-सीएलआरआई, चेन्नई में सरकारी ई-मार्केटप्लेस पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की है।

सीएलआरआई के अलावा पांच सीएसआईआर प्रयोगशालाओं (सीएसआईआर-सीईसीआरआई, सीएफटीआरआई, एनएएल, एसईआरसी और एनआईआईएसटी) ने भी कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यक्रम में माल की खरीद, ऑर्डर

सीएसआईआर-एचआरडीसी ने 6-7 फरवरी, 2023 के दौरान सीएसआईआर-आईआईटीआर, लखनऊ में नोटिंग, ड्रापिंग और सेवा नियमों पर दो दिवसीय

कार्यक्रम का आयोजन किया।

लखनऊ स्थित सीएसआईआर प्रयोगशालाओं (सीएसआईआर-आईआईटीआर, सीडीआरआई, एनबीआरआई और सीमेप) के लगभग 120



प्रोसेसिंग और भुगतान, अभ्यास सत्र पर व्यावहारिक प्रशिक्षण जीईएम पोर्टल पर सेवाओं की खरीद और सीएसआईआर में अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं से संबंधित सभी बारीकियों को शामिल किया गया।

श्री रमेश महादेवन, बिजनेस फौसिलिटेटर, जीईएम इस कार्यशाला के स्त्रोत व्यक्ति थे। इस कार्यक्रम में अड़तालीस प्रतिभागी शामिल हुए। डॉ के जे श्रीराम, निदेशक, सीएसआईआर-सीएलआरआई ने कार्यशाला का उद्घाटन किया और अध्यक्षीय भाषण दिया।

3- leUo;dk dk lEeyu&lg &dk;!kkyk xkok e] 16&17 Qjoj] 2023

सीएसआईआर-एनआईओ, गोवा के सहयोग से सीएसआईआर-मानव संसाधन विकास केंद्र गाजियाबाद ने 16-17 फरवरी 2023 के दौरान "सीएसआईआर एकीकृत

कौशल पहल कार्यक्रम" के लिए समन्वयकों के सम्मेलन-सह-कार्यशाला का आयोजन किया।

भविष्य की कार्रवाई की समीक्षा करने और तैयार करने के उद्देश्य से, सीएसआईआर ने 2016 में एक राष्ट्रीय स्तर का अनूठा कार्यक्रम "सीएसआईआर इंटीग्रेटेड स्किल इनिशिएटिव" लॉन्च किया।

इस पहल का प्रमुख फोकस युवा दिमाग को सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के संपर्क के माध्यम से आवश्यक तकनीकी कौशल से लैस करना और विशाल तकनीकी अंतर के लिए महत्वपूर्ण जरूरतों को उन्नत प्रौद्योगिकी का उपयोग द्वारा संबोधित करना है।

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि प्रोफेसर बी के मिश्रा, निदेशक, आईआईटी गोवा ने किया तथा स्वागत भाषण प्रो सुनील कुमार सिंह निदेशक,

सीएसआईआर-एनआईओ, गोवा ने दिया।

डॉ आर के सिन्हा प्रमुख, सीएसआईआर-एचआरडीसी, गाजियाबाद ने कौशल विकास में सीएसआईआर की भूमिका के बारे में बात की और डॉ. विनय कुमार, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-एचआरडीसी, गाजियाबाद ने कार्यक्रम के तहत विभिन्न गतिविधियों पर रिपोर्ट प्रस्तुत की।

श्री संजीव सिंह कार्यकारी उपाध्यक्ष (सीएसआर और कौशल विकास वित्त पोषण) राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) ने कौशल पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार के लिए सीएसआईआर और एनएसडीसी द्वारा संयुक्त प्रयास के तरीकों और साधनों की जानकारी दी।

सीएसआईआर ने अब तक इस पहल के तहत 1.00 लाख से अधिक कर्मियों

को प्रशिक्षित किया है, जिसमें ग्रामीण नागरिकों और महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम शामिल हैं।

कवर किए गए व्यापक वैज्ञानिक क्षेत्र जैविक, रसायन, इंजीनियरिंग और भौतिक विज्ञान हैं।

सीएसआईआर ने दूसरे चरण (2020-2025) में इस कार्यक्रम के तहत 100000 से अधिक कर्मियों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा है।

इस कार्यक्रम में पूरे भारत में सभी सीएसआईआर प्रयोगशालाओं ने भाग लिया।

श्री आर ए श्रीपदा वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, सीएसआईआर-एनआईओ ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

4- uofu;ä oKkfudk d fy, l eko'ku dk;Øe] 13&18 Qjoh] 2023

सीएसआईआर-एचआरडीसी द्वारा सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर में 13-18 फरवरी, 2023 के दौरान नवनियुक्त वैज्ञानिकों के लिए समावेशन



कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. नादिर शेख, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा किया गया था। सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं से भर्ती हुए अठारह नए वैज्ञानिकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम में सीएसआईआर की दृष्टि, मिशन और सीएसआईआर की संस्कृति, राष्ट्रीय और वैश्विक एस एंड टी और

औद्योगिक परिदृश्य, एस एंड टी में सामाजिक अनुप्रयोग, आईपीआर, खरीद, प्रशासनिक मामले, सीएसआईआर की वित्तीय प्रणाली, निवारक सतर्कता, लिंग संवेदीकरण आदि शामिल थे।

कार्यक्रम में केस स्टडी, रोल प्ले, इंटरएक्टिव सत्र, प्रयोगशाला का दौरा आदि व्यावहारिक ज्ञान कार्यक्रम भी सम्मिलित थे।

सीएसआईआर-नीरी द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन

पृथ्वी के इतिहास में आधिकारिक तौर पर 'एंथ्रोपोसीन' को मानव-प्रभावित युग घोषित करने की आवश्यकता है

सीएसआईआर-राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-नीरी) ने 28 फरवरी 2023 को नीरी ऑडिटोरियम में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। मुख्य अतिथि प्रो. एस.के. टंडन, विजिटिंग प्रोफेसर, पृथ्वी और पर्यावरण विज्ञान विभाग, भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआईआर), भोपाल



ने इस अवसर पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। इस अवसर पर सीएसआईआर-नीरी के निदेशक डॉ. अतुल एन. वैद्य भी उपस्थित थे।

'एंथ्रोपोसिन कॉन्सेप्ट' पर प्रकाश डालते हुए, प्रो. टंडन ने पृथ्वी की सतह और इसके विकास का एक संक्षिप्त विवरण प्रदान किया।

उन्होंने उल्लेख किया कि पृथ्वी लगभग 4.5 अरब वर्ष पुरानी है और इसकी भूवैज्ञानिक समयरेखा सेनोजोइक, मेसोजोइक और पेलियोजोइक युगों में फैली हुई है। उन्होंने कहा कि पिछले दो सौ वर्षों से मानव जाति ने पर्यावरण पर इतना नकारात्मक प्रभाव डाला है कि कुछ वैज्ञानिक इसे एक नए भूवैज्ञानिक युग के रूप में वर्णित करते हैं: पृथ्वी पर मानव प्रभाव की आयु या एंथ्रोपोसीन।

प्रो. टंडन ने बताया कि पर्यावरण क्षरण और जलवायु परिवर्तन में इतनी वृद्धि हुई है जितनी इतिहास में किसी अन्य समय में नहीं देखी गई। उन्होंने यह भी कहा कि एंथ्रोपोसीन भूगर्भीय समय की एक अनौपचारिक इकाई है, जिसका उपयोग पृथ्वी के इतिहास में सबसे हाल की अवधि का वर्णन करने के लिए किया जाता है जब मानव गतिविधि ने ग्रह की जलवायु और पारिस्थितिक तंत्र पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालना शुरू किया। उन्होंने आधिकारिक तौर पर 'एंथ्रोपोसीन' को एक नई भूगर्भीय समयरेखा के रूप में घोषित करने और इसे (एंथ्रोपोसीन) वर्तमान भूवैज्ञानिक समयरेखा 'होलोसीन' से अलग करने की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रो. टंडन ने बताया कि इंटरनेशनल कमीशन ऑन स्ट्रेटीग्राफी के तहत एंथ्रोपोसीन वर्किंग ग्रुप (AWG) ने अभी भी पृथ्वी और पर्यावरण विज्ञान के संदर्भ में 'एंथ्रोपोसीन' की परिभाषा तय नहीं की है। वैश्विक जल संकट और दुनिया की बड़ी

नदियों पर मानवजनित प्रभाव पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि एक ग्रहीय सीमा ढांचा तैयार करने की आवश्यकता है जो स्थानीय और वैश्विक जल स्थिरता लक्ष्यों के समाधान के लिए उपयोगी हो। उन्होंने

ऊर्जा उत्पादन, संसाधनों की खपत और बढ़ती जनसंख्या को इस नए भूगर्भीय युग-एंथ्रोपोसीन की उपस्थिति के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार ठहराया, क्योंकि कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस से उत्पन्न ऊर्जा बड़ी मात्रा में ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करती है, जो ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण है।

डॉ. वैद्य ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि विभिन्न उद्देश्यों के लिए मानव समाज के विकास के लिए विज्ञान आवश्यक है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण के संदर्भ में, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग विभिन्न तरीकों से लोगों के जीवन को बढ़ाता है।

उन्होंने वैज्ञानिकों से ऐसी अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं पर काम करने का आग्रह किया जो जनहित के वैज्ञानिक ज्ञान का सृजन कर सकें।

डॉ. शालिनी ध्यानी ने कार्यवाही का संचालन किया और धन्यवाद ज्ञापन श्री प्रकाश कुम्भारे ने किया।

सार्वजनिक स्वास्थ्य दंत चिकित्सा



विभाग, गवर्नमेंट डेंटल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, नागपुर के 45 बीडीएस छात्रों ने इस अवसर पर सीएसआईआर-नीरी का दौरा किया।

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक
सीएसआईआर समाचार